Hindustan

July 14, 2007

हिन्दुस्तान

फेस्ट पृष्ठ 1 — मैं विरासत से संतुष्ट हूँ : संगीता

'ऑर्डर ऑफ द फीनिक्स' ने पहले ही दिन बटोरे चार करोड़ 48 लाख डॉलर — दस्तक पृष्ठ 18

काबिल बनाओ, मिट जाएगी गरीबी

जे-पाल की लॉंचिंग पर बोले इन्फोसिस के संस्थापक नारायणमूर्ति

भारतेन्दु त्रिवेदी

चेन्नै। भारत और चीन दुनिया की उभरती ताकत हैं। दुनिया को उम्मीद है कि अगले 30 वर्षों में दोनों देश सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनकर उभरेंगे। हालांकि इस सिक्के के दूसरे पहलू को देखें तो भारत अब भी कई मामलों में पीछे है। शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, बढ़ती गरीबी जैसे कई क्षेत्र हैं, जिनमें भारत छोटे-छोटे देशों से भी पीछे है। 'इन्फोसिस' के संस्थापक नारायण मूर्ति ने ये बातें 'अब्दुल लतीफ जमील पावर्टी एक्शन लैब (जे-पाल)' की भारत में लॉंचिंग के अवसर पर कहीं।

नारायणमूर्ति ने कहा कि भारत की गरीबी मिटाने का सबसे अच्छा तरीका है-लोगों को काबिल बनाओ कि वे देश के आर्थिक विकास में बेहतर सहयोग कर सकें। इसके लिए जरूरी है कि किसी भी पॉलिसी को बेहतर तरीके से लागू किया जाए। इसलिए जे-पाल के कंधों पर बड़ी जिम्मेदारी है कि वह दुनिया को बताए कि कौन-सी योजना-कार्यक्रम प्रभावी हैं और कौन नहीं। श्री मूर्ति ने कहा कि अगर भारत को गरीबी पर जीत पानी है तो जे-पाल को भी जीतना होगा।

जे-पाल के दक्षिण एशियाई कार्यालय की चेन्नै में लॉंचिंग कार्यक्रम पर जे-पाल के सह संस्थापक और मैसेच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के प्रोफेसर अभिजीत वी. बनर्जी ने कहा कि दक्षिण एशिया में भारत को चुनने का एक ही कारण है कि भारत में मिली सफलता विकासशील देशों के लिए मानक-सी मानी जाती है। उन्होंने बताया कि चेन्नै स्थित इंस्टीट्यूट फार फाइनेंशियल मैनेजमेंट एंड रिसर्च और एमआईटी दक्षिण एशिया में होने वाले सभी कार्यक्रमों में सहयोगी हैं। उन्होंने कहा कि जे-पाल पॉलिसी/स्कीम को डिजाइन करने में सरकारों की मदद करेगी। जे-पाल की निदेशक और एमआईटी की प्रोफेसर ईस्थर डुफ्लो ने 'हिन्दुस्तान' को बताया कि जे-पाल की नजर में उत्तर प्रदेश का बड़ा महत्व है।

[illegible] : पृष्ठ 17

श्रावस्ती के एसपी व सीओ निलम्बित एसओ बर्खास्त

युवती के अपहरण मामले की जाँच करेंगे कमिश्नर

रिहा हो जाएगा हनीफ

आस्ट्रेलियाई पुलिस ने रिमांड बढ़ाने की अर्जी

इंजीनियरिंग व मैनेजमेंट कॉलेजों में 8000 से ज्यादा सीटें बढ़ीं

Hindustan

July 14, 2007

प्रदेश में सक्रियता बढ़ेगी जे-पाल की

चेन्नै (कासं)। जे-पाल की निदेशक और एमआईटी की प्रोफेसर ईस्थर डुफलो ने बताया कि उत्तर प्रदेश राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से भारत का महत्वपूर्ण राज्य है। फिलहाल में जे-पाल तीन इवैल्युएशन प्रोग्राम इस राज्य में चला रहा है और उम्मीद है कि भविष्य में जे-पाल उत्तर प्रदेश में अपनी सक्रियता बढ़ाएगा।

क्या है जे-पाल

अब्दुल लतीफ जमील पावर्टी एक्शन लैब की स्थापना जनवरी 2003 में एमआईटी के तीन अर्थशास्त्रियों ईस्थर डुफलो, सेंदिल मुलिनाथन और अभिजीत वी. बनर्जी ने मिलकर की। इस संस्था का उद्देश्य किसी पॉलिसी/स्कीम के प्रभाव को जानना है कि वह कितनी कारगर है। जे-पाल ने किसी दवा की जाँच करने के तरीके को सामाजिक योजना में लागू किया।

क्या है रेंडमाइज ट्रायल-

किसी दवा के प्रभाव को जानने के लिए स्वयंसेवकों के दो ग्रुप बनाए जाते हैं। एक, ट्रीटमेंट व दूसरा, कंट्रोल। ट्रीटमेंट ग्रुप को दवा दी जाती है और कंट्रोल ग्रुप को नहीं। कुछ समय दोनों ग्रुप में आए बदलाव को जाँचा जाता है।

ट्रीटमेंट ग्रुप में आया बदलाव पर दवा का प्रभाव होता है। यहाँ यह ध्यान रखा जाता है कि ट्रीटमेंट और कंट्रोल दोनों ग्रुप के ग्रुप वाले आयु, वजन जैसी चीजें समान हों। इसी तरीके से जे-पाल ने समाज से जुड़ी पॉलिसी और योजनाओं के प्रभाव जाँचने के लिए शुरुआत की है। इस तरीके का फायदा यह होता है कि हमें सही-सही पता लगता है कि किसी योजना का प्रभाव कितना है। उदाहरण के तौर पर प्राथमिक स्कूलों में बच्चों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए बच्चों को मिड-डे मिल देने की योजना शुरू की गई। तभी किसी अन्य संगठन ने बच्चों को किताबें देने की योजना शुरू कर दी। ऐसे में मिड-डे मिल योजना के प्रभाव का पता 'रेंडमाइज इवैल्युएशन' की मदद से किया जा रहा होता तो किताबें बाँटने का प्रभाव जितना ट्रीटमेंट ग्रुप पर पड़ता, उतना ही कंट्रोल ग्रुप पर। यानी ट्रीटमेंट और कंट्रोल दोनों ग्रुप में किताबों वाली योजना के शुरू होने के बाद पड़ने वाला प्रभाव ही मिड-डे मिल योजना का प्रभाव होगा।

कारपोरेट जगत राजनीति में न पड़े : नारायणमूर्ति

चेन्नै (प्रेट्र)। इंफोसिस के संस्थापक नारायणमूर्ति ने यहाँ एक कार्यक्रम में कहा कि कारपोरेट जगत को राजनीति में अपनी भूमिका नहीं निभानी चाहिए।

Hindustan

July 14, 2007

'काबिल बनाओ, मिट जाएगी गरीबी'

जे-पाल की लॉचिंग पर बोले नारायणमूर्ति

भारतेन्दु त्रिवेदी

चेन्नै। भारत और चीन दुनिया की उभरती ताकत हैं। दुनिया को उम्मीद है कि अगले 30 वर्षों में दोनों देश सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनकर उभरेंगे। हालांकि इस सिक्के के दूसरे पहलू को देखें तो भारत अब भी कई मामलों में पीछे है। शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, बढ़ती गरीबी जैसे कई क्षेत्र हैं, जिसमें भारत छोटे-छोटे देशों से भी पीछे है। 'इंफोसिस' के संस्थापक नारायण मूर्ति ने ये बातें 'अब्दुल लतीफ जमील पावर्टी एक्शन लैब (जे-पाल)' को भारत में लाँचिंग के अवसर पर कहीं।

नारायणमूर्ति ने कहा कि भारत की गरीबी मिटाने का सबसे अच्छा तरीका है- लोगों को काबिल बनाओ कि वे देश के आर्थिक विकास में बेहतर सहयोग कर सकें। इसके लिए जरूरी है कि किसी भी पॉलिसी को बेहतर तरीके से लागू किया जाए। इसलिए जे-पाल के कंधों पर बड़ी जिम्मेदारी है कि वह दुनिया को बताए कि कौन-सी योजना/कार्यक्रम प्रभावी है और कौन नहीं। श्री मूर्ति ने कहा कि अगर भारत को गरीबी पर जीत पानी है तो जे-पाल को भी योगदान होगा।

जे-पाल के दक्षिण एशियाई कार्यालय की चेन्नै में लाँचिंग कार्यक्रम पर जे-पाल के सह संस्थापक और मैसेच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी के प्रोफेसर अभिजीत वी. बनर्जी ने कहा कि दक्षिण एशिया में भारत को चुनने का एक ही कारण है कि भारत में मिली सफलता विकासशील देशों के लिए मानक-सी मानी जाती है। उन्होंने बताया कि चेन्नै स्थित इंस्टीट्यूट फार फाइनेंशियल मैनेजमेंट एंड रिसर्च और एमआईटी दक्षिण एशिया में होने वाले सभी कार्यक्रमों में सहयोगी हैं। उन्होंने कहा कि जे-पाल पॉलिसी/स्कीम को डिजाइन करने में सरकारों की मदद करेगी। जे-पाल की निदेशक और एमआईटी की प्रोफेसर ईस्थर डुफलो ने 'हिन्दुस्तान' को बताया कि जे-पाल की नजर में उत्तर प्रदेश का बड़ा महत्व है क्योंकि यह राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से भारत का महत्वपूर्ण राज्य है। फिलहाल में जे-पाल तीन इवैल्युएशन प्रोग्राम इस राज्य में चला रहा है और उम्मीद है कि भविष्य में जे-पाल उत्तर प्रदेश में अपनी सक्रियता बढ़ाएगा।

क्या है जे-पाल

अब्दुल लतीफ जमील पावर्टी एक्शन लैब की स्थापना जनवरी 2003 में एमआईटी के तीन अर्थशास्त्रियों ईस्थर डुफलो, सेंदिल मुलिनाथन और अभिजीत वी. बनर्जी ने मिलकर की। इस संस्था का उद्देश्य किसी पॉलिसी/स्कीम के प्रभाव को जानना है कि वह कितनी कारगर है। जे-पाल ने किसी दवा की जाँच करने के तरीके को सामाजिक योजना में लागू किया।

क्या है रैंडमाइज ट्रायल

किसी दवा के प्रभाव को जानने के लिए स्वयंसेवकों के दो ग्रुप बनाए जाते हैं। एक, ट्रीटमेंट व दूसरा, कंट्रोल। ट्रीटमेंट ग्रुप को दवा दी जाती है और कंट्रोल ग्रुप को नहीं। कुछ समय दोनों ग्रुप में आए बदलाव को जाँचा जाता है। ट्रीटमेंट ग्रुप में आया बदलाव पर दवा का प्रभाव होता है। यहाँ यह ध्यान रखा जाता है कि ट्रीटमेंट और कंट्रोल दोनों ग्रुप के ग्रुप वाले आयु, वजन जैसी चीजें समान हों।

इसी तरीके से जे-पाल ने समाज से जुड़ी पॉलिसी और योजनाओं के प्रभाव जाँचने के लिए शुरुआत की है। इस तरीके का फायदा यह होता है कि हमें सही-सही पता लगता है कि किसी योजना का प्रभाव कितना है।

उदाहरण के तौर पर प्राथमिक स्कूलों में बच्चों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए बच्चों को मिड-डे मिल देने की योजना शुरू की गई। तभी किसी अन्य संगठन ने बच्चों को किताबें देने की योजना शुरू कर दी। ऐसे में मिड-डे मिल योजना के प्रभाव का पता 'रैंडमाइज इवैल्युएशन' की मदद से किया जा रहा होता तो किताबें बाँटने का प्रभाव जितना ट्रीटमेंट ग्रुप पर पड़ता, उतना ही कंट्रोल ग्रुप पर। यानी ट्रीटमेंट और कंट्रोल दोनों ग्रुप में किताबों वाली योजना के शुरू होने के बाद पड़ने वाला प्रभाव ही मिड-डे मिल योजना का प्रभाव होगा।